# कि कोई नष्ट न हो

फ्रैंकलिन के द्वारा लिखे नोट्स

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर की संप्रभुता की घोषणा बड़े स्पष्ट रूप में की गई है।

संप्रभु –> वह जिसके पास सर्वोच्च अधिकार और सामर्थ्य है और जो सबके ऊपर इसे कार्य में लाता है।

**यशायाह 46:8-12** (8) **इस बात को स्मरण करो** और **ध्यान दो, इस पर फिर मन लगाओ।** (9) **परमेश्वर मैं ही हूँ,** दूसरा **कोई नहीं; मैं ही परमेश्वर हूँ** और मेरे तुल्य **कोई भी नहीं** है। (10) मैं तो **अन्त की बात आदि से** और प्राचीनकाल से उस बात को **बताता आया हूँ** जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, **मेरी युक्ति स्थिर रहेगी** और **मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।** (11) **मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैं ने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी करूँगा।**

सर्वसामर्थी प्रभु परमेश्वर जो सब वस्तुओं से पहले था और जिसके द्वारा सब वस्तुओं की रचना हुई, उसने अपने शब्द के द्वारा संसार की रचना की। परमेश्वर जो चाहे वह कर सकता है और पूरा कर सकता है।

**यशायाह 55:8-9 और 11** यहोवा कहता है, **मेरे विचार** और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न तुम्हारी गति और **मेरी गति** एक सी है। 9 क्योंकि **मेरी** और तुम्हारी **गति** में और **मेरे** और तुम्हारे सोच **विचारों** में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है। 11 **उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा।**

ऐसे कुछ पद हैं जो प्रभु की संप्रभुता को चुनौती देते हुए प्रतीत होते हैं। प्रश्न यह है :

क्या वह संप्रभु है या नहीं?

पिछले पद स्पष्ट रूप से हमारे पिता परमेश्वर की संप्रभुता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। और इस बात को ध्यान में रखते हुए, इस पर विचार करें...

**मत्ती 18:14** यीशु एक खोई हुई भेड़ के बारे में बात कर रहा है, न कि भेड़ों और बकरियों के बारे में। वह स्पष्ट रूप से कह रहा है कि **उसकी एक भी भेड़ नष्ट नहीं होगी** क्योंकि **वह संप्रभु है** और... **ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं कि इन छोटों में से एक भी नष्ट हो।**

यीशु विशेष रूप से अपनी भेड़ के बारे में ही बात कर रहा है। हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि इसमें सब बच्चे शामिल हैं, बल्कि केवल वे शामिल हैं जो उसके हैं।

**यूहन्ना 10:14-16** अच्छा चरवाहा मैं हूँ; **मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ,** और **मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं।** 15 मैं **भेड़ों के लिये** अपना प्राण देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़ें हैं, (अर्थात् अन्यजाति के लोग) जो इस भेड़शाला की नहीं (वह इस्राएलियों से बात कर रहा है)। **मुझे उनका भी लाना अवश्य है। वे मेरा शब्द सुनेंगी,** तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा **होगा।** 26 परन्तु **तुम इसलिये विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों "में से" नहीं हो।**

उसने कहा कि यदि आप उसके नहीं है तो आप विश्वास नहीं करेंगे। केवल वे जो उसके हैं, वे ही विश्वास करेंगे। अतः जो "उसकी भेड़ें नहीं हैं," वे नष्ट होंगे। देखें मत्ती 13:30, 37-42 और रोमियों 9:22

27 **मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ,** और **वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं** 28 **और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और** कोई उन्हें मेरे हाथ से

छीन न लेगा।

**यशायाह 14:24** सेनाओं के यहोवा ने यह **शपथ खाई है, नि:सन्देह जैसा मैं ने ठान लिया है, वैसा ही हो जाएगा**, और **जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी**।

**यशायाह 44:24-26** यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो **तुझे गर्भ ही से बनाता आया है**, यों कहता है, मैं यहोवा ही **सब का बनानेवाला हूँ, जिसने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है**। 25 मैं झूठे लोगों के कहे हुए चिह्नों को व्यर्थ कर देता और भावी कहनेवालों को बावला कर देता हूँ। मैं बुद्धिमानों को पीछे हटा देता और उनकी पण्डिताई को मूर्खता बनाता हूँ, 26 **और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सफल करता हूँ**।

**भजन 33:8-12** सारी पृथ्वी के लोग **यहोवा से डरें**, जगत के सब निवासी **उसका भय मानें!** 9 **क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया**; जब **उसने आज्ञा दी**, तब वास्तव में वैसा ही हो गया। 10 यहोवा जाति-जाति की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की कल्पनाओं को निष्फल करता है। 11 **यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहेगी**, उसके मन की **कल्पनाएँ पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेंगी**। 12 क्या ही धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और **वह समाज जिसे उसने** अपना निज भाग होने के लिये **चुन लिया हो!**

एक और पद जो प्रभु की संप्रभुता पर प्रश्न करता प्रतीत होता है, यह है : **2 पतरस 3:9**

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर **तुम्हारे विषय में** धीरज धरता है, और **नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले**।

- कुछ लोग गलत रीति से सोचते और सिखाते हैं कि यह पद दर्शाता है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि **कोई भी** नष्ट हो। यदि यह सच है, तो **परमेश्वर संप्रभु नहीं है** क्योंकि पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि बहुत से लोग नरक में **नष्ट होंगे** (मत्ती 23:33)।

- पतरस **सब लोगों** को यह पत्री नहीं लिख रहा, बल्कि **केवल विश्वासियों को लिख रहा है।** 9 तुम्हारे विषय में धीरज धरता है। 'तुम्हारे विषय में' किसके लिए है?

- उत्तर : 2 पतरस 1:1 उन **लोगों के नाम** जिन्होंने हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है।** ऐसे **लोगों** को वह **नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।**

- उसकी **इस इच्छा** के कारण वे **सब आएँगे।** जैसा कि यीशु ने कहा है :

  **यूहन्ना 6:37-40 जो कुछ** पिता मुझे देता है **वह सब मेरे पास आएगा,** और जो कोई मेरे पास आएगा **उसे मैं कभी न निकालूँगा।** 38 क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं** वरन् अपने भेजनेवाले की **इच्छा पूरी करने के लिये** स्वर्ग से उतरा हूँ; 39 और **मेरे भेजनेवाले की इच्छा** यह है कि **जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ।** 40 क्योंकि **मेरे पिता की इच्छा यह है** कि **जो कोई पुत्र को देखे** और **उस पर विश्वास करे, वह अनन्त जीवन पाए; और मैं उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँगा।**

  यशायाह 46:11 **मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैं ने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी करूँगा।**

  प्रभु ने अपनी दया और अपने न्याय को प्रमाणित करने के लिए **संपूर्ण मनुष्यजाति** के अपराधों और पापों को क्षमा कर दिया।

  **2 कुरिन्थियों 5:19** कहता है : परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ **संसार का**

**मेलमिलाप कर लिया,** और **उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया**। पद 20 कहता है : हम मसीह की ओर से **निवेदन करते हैं** कि **परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो**। कुछ **प्रत्युत्तर देंगे** और **कुछ नहीं देंगे। क्यों नहीं??** जैसा कि यीशु ने कहा :

**यूहन्ना 10:26** परन्तु तुम इसलिये **विश्वास** नहीं करते **क्योंकि** मेरी **भेड़ों में से** नहीं हो।

यह पद सब कुछ स्पष्ट कर देता है।

**यूहन्ना 8:37-38** मैं जानता हूँ कि तुम अब्राहम के वंश से हो; तौभी **मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता,** इसलिये तुम मुझे मार डालना चाहते हो। क्योंकि मैं वही **कहता हूँ,** जो **अपने पिता** के यहाँ देखा है; और तुम वही करते रहते हो जो तुम ने **अपने पिता** से सुना है। **दो अलग-अलग पिता** 44 तुम **अपने पिता** शैतान **"से"** हो 47 जो **परमेश्वर से होता है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है;** और **तुम इसलिये नहीं सुनते कि परमेश्वर की ओर "से" नहीं हो।**

यूनानी शब्द **"से"** का अर्थ है : **"उद्गम के स्रोत के रूप में।"**

यह सच्चाई उत्पत्ति 3:15 से आरंभ होता है कि इस पृथ्वी के सब लोगों का उद्गम "स्त्री के वंश से" **या** "सांप के वंश से" है।

- गलातियों 4:26 ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और **वह हमारी माता है**।
- प्रकाशितवाक्य 12:17 तब अजगर **स्त्री** पर क्रोधित हुआ, और **उसकी शेष सन्तान से,** जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं, लड़ने को गया।

जैसे कि जो शैतान से जन्मे हैं, उनके बारे में यीशु ने कहा था, तुम **अपने पिता** शैतान **"से"** हो, वे **कभी विश्वास नहीं करेंगे**।

- **यूहन्ना 10:26** परन्तु तुम इसलिये **विश्वास** नहीं करते **क्योंकि** मेरी भेड़ों में **"से"** नहीं हो।

**यह परमेश्वर की गलती नहीं है कि वे नष्ट होते हैं, उनके पाप तो क्षमा किए गए हैं,** देखें 2 कुरिन्थियों 5:19। यह महान अनुग्रह है। परंतु इस कारण कि **कौन उनका पिता है** और उस डी.एन.ए. के कारण वे **विश्वास नहीं करेंगे,** वे **विश्वास नहीं कर सकते** और वे **नष्ट होंगे।**

और वे सब जो "जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन" लिए गए हैं (इफि 1:4) और "नये सिरे से" जन्मे हैं (यूहन्ना 3:3) "यीशु की भेड़ें" हैं (यूहन्ना 10) जैसा कि उसने कहा है : **यूहन्ना 6:37 जो कुछ** पिता मुझे देता है **वह सब मेरे पास आएगा,** और **मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ। और परमेश्वर संप्रभु है!!!**

और अधिक पुष्टि के लिए इन पदों को पढ़ें : रोमियों 9:6-16, गलातियों 4:22-31

विचार करने का एक और पद स्पष्टता के लिए कठिन है :

**1 तीमुथियुस 2:3-4** यह पद भी परमेश्वर की संप्रभुता को चुनौती देता प्रतीत होता है क्योंकि यह कहता है : यह हमारे उद्धारकर्ता **परमेश्वर** को अच्छा लगता और भाता भी है, 4 **जो यह "चाहता है" कि सब मनुष्यों का उद्धार हो,** और **वे सत्य को भली भाँति पहचान लें।** इस अनुवाद में **परमेश्वर** क्रिया **"चाहता है" का कर्ता है।** यह लिखा है : **"वह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो।"**

परंतु 1 तीमुथियुस 2:3-4 का **अक्षरशः अनुवाद** यह है : यह हमारे **उद्धारकर्ता** परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, 4 **कि सब मनुष्यों का उद्धार "हो"।**

यूनानी भाषा में यह स्पष्ट है **मनुष्य हो** क्रिया का **कर्ता है** जो कि एक सक्रिय क्रिया है; अर्थात् कर्ता "**मनुष्य**" **उद्धार पाने** का कार्य करते हैं। उद्धार पाने के लिए मनुष्यों को

क्या करना है??? अगला पद यह बताता है :

5 क्योंकि **परमेश्वर एक ही है,** और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी **एक ही बिचवई है,** अर्थात् **मसीह यीशु जो मनुष्य है।** 6 **जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया।** हाँ सबके लिए। परंतु समस्या यह है

**सब मनुष्यों को** विश्वास के द्वारा परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् **मसीह यीशु** जो मनुष्य है के द्वारा आना **"होगा,"** सत्य पर **विश्वास करना होगा** और उसे प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में **स्वीकार करना** होगा।

जिस तरह से अंग्रेजी का अनुवाद किया गया है, उससे लगता है कि परमेश्वर कर्ता है और वह उद्धार देने का कार्य करता है। हाँ, परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में **अपने पुत्र को देने का कार्य किया।**

परंतु फिर उद्धार के लिए कदम उठाने का कार्य मनुष्य का हो जाता है, कि वह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच के **एक** ही बिचवई, अर्थात् **मसीह यीशु** जो मनुष्य है, उस पर विश्वास करे और उसे स्वीकार करे। **जो द्वार पर खड़ा खटखटाता है** प्रकाशितवाक्य 3:10 **यह परमेश्वर का कार्य है।** परंतु **प्रत्येक मनुष्य को कदम बढ़ाकर द्वार को खोलना है।**

और यदि हम अंग्रेजी अनुवाद को लें जो परमेश्वर को इस प्रकार दर्शाता है **जो "चाहता" है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो** तो यदि **कोई** नष्ट होता है तो परमेश्वर फिर संप्रभु नहीं है, पर पवित्रशास्त्र तो स्पष्ट रीति से कहता है कि वह संप्रभु है।

परंतु सच्चाई यह है कि **सब मनुष्य नहीं आएँगे** और **वे आ नहीं सकते।** क्योंकि **1.** यीशु ने कहा, **मेरा वचन तुम्हारे हृदय में जगह नहीं पाता।** और, **2. तुम इसलिये विश्वास नहीं**

करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। यूहन्ना 10:26 और **3.** तुम **अपने पिता** शैतान **से हो।** और उनका डी.एन.ए. उन्हें अनुमति नहीं देता और इसलिए वे विश्वास **नहीं कर सकते।** वे **गलत वंश** "से" हैं। वे **नष्ट होंगे** परंतु **इसमें परमेश्वर की गलती नहीं है** बल्कि "शैतान" की गलती है जो उन्हें संसार में लाया है।

और हाँ इससे हमारे पिता को बुरा लगता है कि लूसिफर ने विद्रोह किया और "उसकी अपनी संतान है" जिनमें उसका डी.एन.ए. है, अर्थात् वह हमारे पिता की संतान **नहीं** है और इसलिए वे मन नहीं फिरा सकते, और न ही कभी फिराएँगे।

इसे और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए www.treasurehisword.com पेज 5 पर *"आत्मिक युद्ध और दो संतानें लघु संस्करण"* को देखें। या पूरे संस्करण : *"आत्मिक युद्ध और दो संतानें"* को देखें।

पद 1 और 2 का संदर्भ निश्चित रूप से "सब मनुष्यों" का है। **1 तीमुथियुस 2:1-2** अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूँ कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद **सब मनुष्यों** के लिये किए जाएँ। 2 राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ।

और प्रभु यह भी कहता है : यहेजकेल 18:32 क्योंकि, प्रभु यहोवा की यह वाणी है, **जो मरे, उसके मरने से मैं प्रसन्न नहीं होता,** इसलिये **पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे।** जीवित रहने के लिए प्रत्येक मनुष्य को एक कदम उठाना आवश्यक है।

यह हमारे पिता परमेश्वर, जो प्रेम है, उसकी दया और करुणा है। **यूहन्ना 3:16-18** क्योंकि परमेश्वर ने जगत से **ऐसा प्रेम रखा** कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया,

ताकि **जो कोई** उस पर **विश्वास करे** वह **नष्ट न हो,** परन्तु अनन्त जीवन पाए। 17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि **जगत उसके द्वारा उद्धार पाए**। 18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु **जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया**।

यीशु "**सारे जगत के पापों**" के लिए मरा, अर्थात् संपूर्ण मनुष्यजाति के लिए (2 कुरिन्थियों 5:19) परमेश्वर ने मसीह में होकर **अपने साथ संसार का मेलमिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया।**

❖ अतः पाप अनंत जीवन के लिए कोई मायने नहीं रखता!

यीशु ने कहा : **यदि वे विश्वास करते हैं** तो वे **नष्ट नहीं होंगे,** इसलिए अनंत जीवन के लिए **विश्वास करना** मायने रखता है, **न कि पाप।**

तो फिर उन लोगों के विषय में क्या जो **"उसकी भेड़ें" तो हैं,** पर समझ रखने और **विश्वास करने** से पहले छुटपन में ही मर जाते हैं?

यदि वे "उसकी भेड़ें हैं," "नए सिरे से जन्मे हैं," "परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं" (यूहन्ना 1:13), तो जैसा यीशु ने कहा : **जो कुछ उसने मुझे दिया है, उस में से मैं कुछ न खोऊँ, परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ**। 40 क्योंकि **मेरे पिता की इच्छा यह है। उसकी सब भेड़ें अनंत जीवन प्राप्त करेंगी।** क्योंकि **मेरे पिता की इच्छा यह है।** और इसके साथ इस बात की निश्चितता के लिए :

हमारा पिता अपनी सब संतानों को **विश्वास** का एक बड़ा और

अनुग्रहरूपी विश्वास देता है। फिर चाहे वे जानने और समझने के लिए बहुत छोटे ही क्यों न हों... जैसे कि यशायाह 7:16 कहता है : क्योंकि उससे पहले कि वह लड़का बुरे को त्यागना और भले को ग्रहण करना जाने... उन्हें विश्वास का वरदान दिया जाता है क्योंकि वे उसके हैं।

**2 पतरस 1:1** इसकी पुष्टि करता है : शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, **उन लोगों के नाम जिन्होंने** हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है।** परमेश्वर की और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा **अनुग्रह** और शान्ति तुम में बहुतायत से **बढ़ती जाए।** और यह सचमुच बढ़ा है : पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ।

और इब्रानियों 12:2 **विश्वास के कर्ता** (प्रवर्तक) और **सिद्ध करनेवाले** यीशु की ओर ताकते रहें

और जो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, मत्ती 16:15-17 तुम मुझे क्या कहते हो? 16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। 17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु **मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है,** यह बात तुझ पर प्रगट की है। अतः पतरस ने यह जानते हुए यह कहा :

**1 पतरस 1:3-4** हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी **बड़ी दया** से हमें जीवित आशा के लिये **नया जन्म दिया।**

और सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर संप्रभु बना रहता है।

- मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूँ जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूँ, 'मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा।' यशायाह 46:10
- उसने जगत की उत्पत्ति से पहले उसके परिवार को चुन लिया था। इफिसियों 1:4
- भविष्य के लिए उसकी योजना पूरी होगी। यिर्मयाह 29:11
- उद्धार यहोवा ही से होता है। भजन 3:8
- मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैं ने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी करूँगा। यशायाह 46:11
- यह पूरा और समाप्त हुआ कार्य है। जैसा कि यीशु ने कहा था : पूरा हुआ ! यूहन्ना 19:30

अंतिम बात : परमेश्वर संप्रभु है और जो उसका है **उनमें से कोई** नष्ट नहीं होगा। और वे सब जो "परमेश्वर से उत्पन्न" नहीं हुए, **वे नष्ट होंगे।**

गिनती 23:19 ईश्वर मनुष्य नहीं कि **झूठ बोले,** और न वह आदमी है कि **अपनी इच्छा बदले।** क्या जो कुछ **उसने कहा उसे न करे?** क्या **वह वचन देकर उसे पूरा न करे?**

1 यूहन्ना 3:1-3 **देखो, पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ;** और हम हैं भी। **इस कारण** संसार **हमें नहीं जानता,** क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना। 2 हे प्रियो, अब **हम परमेश्वर की सन्तान हैं,** और अभी तक यह प्रगट नहीं

हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो **हम उसके समान होंगे,** क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है।

1 पतरस 1:3-9 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी **बड़ी दया से** हमें जीवित आशा के लिये **नया जन्म दिया,** 4 अर्थात् एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास के लिये जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है; 5 जिनकी **रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से** विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, **की जाती है।** 6 इस कारण तुम **मगन होते हो,** यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दु:ख में हो; 7 और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान् सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर **प्रशंसा** और **महिमा** और **आदर** का कारण ठहरे। 8 उससे तुम बिन देखे **प्रेम रखते हो,** और अब तो उस पर बिन देखे भी विश्वास करके ऐसे आनन्दित और मगन होते हो जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है; 9 और अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात् आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो। आमीन!